9.9.67 ओमशांति रात्रीक्लास

मेहनत जो भी होती है इतना राजभाग पाने लिए वो है ही आत्मअभिमानी बनने में। याद के बल से बाप से वर्सा लेना। बाप को सर्वशक्तिवान कहा जाता है और अंग्रेजी में उनको अथॉरिटी कहा जाता है। ज्ञान का सागर। सन्यासी ,विद्वान लोग भी अपने को शास्त्रों की अथॉरिटी समझते हैं। अब बाप जिनको ज्ञान का सागर कहा जाता है वो तो शास्त्र पढ़ते नहीं हैं ना। शास्त्र आदि पढ़ते हैं तो झूठे ठहरे ना। ज्ञान का सागर तो कुछ भी पढ़ता नहीं है। वो तो है ही नालेजफुल। उनको तो सब नालेज है। सृष्टि की आदि मध्य अंत की नालेज है। मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का बीज है। उनको कहा जाता है सत्य चित आनन्द स्वरूप। ज्ञान का सागर, सुख का सागर.....सबका सागर ही सागर है। सागर भी कम थोड़े ही देता है। कोई2 तो चित्र दिखाते हैं कि सागर से देवता निकले जो कि सागर से रत्नों की थालियां देते थे। सागर को भी देवता कह देते हैं। अच्छा, देता किनको है?लिखा हुआ है कि सागर से देवता निकले जो कि रत्नों की थालियां भर2 देते हैं। कौन लेते हैं? (हम लेते हैं ) वास्तव में एक को नहीं देते हैं। बाबा ज्ञान सागर बैठकर इनमें प्रवेश कर तुम बच्चों को रत्न देते रहते हैं। यह ज्ञान सागर की बात है। इनके शरीर में प्रवेशकर तुम सभी बच्चों की झोली भरते हैं। भगवानोवाच्य अर्जुनप्रति। एक अर्जुन तो नहीं है ना। तो यह रत्नों की बात है। ज्ञान सागर शिवबाबा इनमें बैठ झोली भरते हैं बच्चों की। कहते हैं ना झोली भर दो बम–बम महादेव। अब महादेव शिव को तो नहीं कहेंगे। वो तो शंकर को समझते हैं। उनके पास फिर पैसे कैसे होंगे?अब ब्रह्माकुमारी द्वारा तुम्हारी अविनाशी ज्ञान रत्नों की झोली भर रहे हैं। इस पढ़ाई से फिर तुम यह बनते हो। गरीब ते गरीब भी वहां पर तो पदमपति बन जाते हैं। वहां पर तो अनगिनत धन होता है। गिनती ही नहीं होती है। 2500वर्ष के बाद भी मंदिर बनते हैं तो उनके कितने हीरे जवाहर रहते हैं। राजायें मंदिर बनाते हैं तो प्रजा भी बनावेगी। अनेक मंदिर होते हैं। शिवबाबा बैठ रुहानी बच्चे आत्माओं को समझाते हैं। आत्माओं की भी पूजा होती है। आत्माओं के बाप की भी पूजा होती है। रुद्र पूजा कहते हैं। लाख2 बनाते हैं। कोई 5हजार,कोई हजार भी बनाते हैं। लाख सालिग्राम बनाने में कितना समय लगता होगा। पूजा कर फिर मिट्टी में मिला देते हैं। फिर दूसरे दिन बनाते हैं। उसको ही रूद्र यज्ञ कहते हैं। बाप कहते हैं कि तुम्हारी पूजा भी होती है। शिवबाबा का तो एक ही शिवलिंग का रूप है जिनकी ही पूजा होती है। बाप की पूजा होती है। फिर आत्माओं की पूजा होती है। तो तुम्हारी डबल पूजा होती है ना। तुमको उंच मर्तबा मिलता है। बाप कहते हैं कि तुम रावण मत पर हमको कितनी गालियां देते हो। ईश्वर सर्वव्यापी है। कच्छ मच्छ अवतार में हैं तो कितनी गालियां देते हैं। अपकार करते हैं ना। मैं तो उपकार ही करता हूं। इनका तो गायन भी है कि एक एक ज्ञान रतन पदमों की मिलकियत का है। कथन ही नहीं कर सकते हैं। यह ज्ञान ही रतन है। वो रतन तो कौड़ी मिसल है। भल सन्यासियों के पास पैसे हैं परंतु काम के नहीं हैं। मनुष्य अज्ञान नींद में सोये हुए हैं। पैसे पिछाड़ी में क्या करेंगे?सभी पिछाड़ी में भस्म हो जावेंगे। फिर बाप भीतो लेंगे ही नहीं। कहेंगे तुमसे लेकर और फिर मकान आदि बनावें सब भस्म हो जावे। बाप तो किसी से भी नहीं लेवे तो भी मालिक है ना। समय नाजुक होता जावेगा फिर पैसे क्या करेंगे?गायन भी है ना किनकी दबी रहेगी धूल में.....सब धंधों में है नुकसान। मैं साहुकार हूं, मैं प्राइममिनिस्टर हूं, मेरा इतना व्यापार है। बाप कहते हैं न कि सब धंधों में है नुकसान। यहां पर तो तुम कहते हो ना कि हम नर से नारायण बनेंगे। यह है ही नर से नारायण बनने की कथा। बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं। बाप खुद बताते हैं कि मैं साधारण बूढ़े तन में प्रवेश कर आता हूं। यह है भाग्यशाली रथ। वो लोग तो फिर समझते हैं कि बैल होगा। बैल को ही जाकर मंदिर में रखा हैं शिव तो भृकुटि में ही बैठेंगे। बैल को भी आजकल तो भृकुटि में ही शिव दिखाते हैं। अब बैल कहां से आया?

सूक्ष्मवतन में सर्प कहां से आया जो कि शंकर को दिखाते हैं?बाप बैठ रांग और राइट बताते हैं। माया के राज्य में झूठी माया ,झूठी काया है। विख से पैदा हुआ शरीर है ना। वहां यह है नहीं। इनको कहा जाता है सर्वगुण सम्पन्न.....ऋषि–मुनि तो कह देते हैं कि हम रचता और रचना को नही जानते हैं। फिर दुका लगाते रहते हैं।आप ही कहते भी हैं कि झूठी माया.....झूठा सभी संसार। सच खंड भी भारत ही बनता है। अब तो बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। आत्मा सुनती है बाप द्वारा। मनुष्यों को देह अभिमान रहता है। यहां तो बाप कहते हैं कि अपने को आत्मा समझो। आत्मा परमात्मा का सुंदर मेला यहां पर होता है। मूलवतन में थोड़े ही मिलेंगे। मेला इसको कहेंगे। जीवात्मा और परमात्मा। बाप ही इस समय जीवपरमात्मा है। वो तो घर है। उनको मेला नहीं कहेंगे। अभी मेला है जबकि बच्चे मिलते हैं। बाप देता है तुम लेते हो। लेना–देना होता है। बाप भी बहुत दान करते हैं। तुम भी सब कुछ देते हो। भारत ही महान दानी गाया जाता है। महादानी है। तुम बच्चे ही भारत ही पर जीत पाते हो। फिर तुम ही हार खावेंगे। और किसी धर्म के लिए ऐसा नहीं कहा जाता है। हमेशा याद करो कि शिवबाबा रूहानी बच्चों को समझाते हैं। बाबा कहते हैं कि मैं हर 5000वर्ष बाद आकर तुमको समझाता हूं। जो मेरी मत पर चल कर पवित्र बनते हैं वो ही उंच पद पाते हैं। विनाश काले विपरीत बुद्धि.....विपरीत बुद्धि ही माना कि ठिक्कर भित्तर में कह देते हैं। तुम्हारी तो कितनी प्रीत बुद्धि है। तुम रूहानी पंडे हो। यात्रा आत्मा करती है। यह है रूहानी यात्रा। वो तो हैं जिस्मानी पंडे। तुम हो रूहानी पंडे। अभी तमोप्रधान जरूर बनना है। नहीं तो सजायें भी खाओगे तो पद भी भ्रष्ट होगा। ओम।

10.9.67 रात्रीक्लास–बाप पूछते हैं कि सभी आत्मअभिमानी होकर बैठे हो?मेहनत ही सारी इसमें है। सभी को यही समझाओं कि शिवबाबा को याद करोगे तो पाप कट जावेंगे। कल्याण ही इसमें है कि बाप को याद करो। बोलने से उनको तीर लगेगा और खुद ही याद की यात्रा में नहीं होंगे तो उनको कुछ भी असर नहीं होगा। मूल बात है ही याद की। तुम बोलते हो कि भूल जाते हैं क्योंकि आधा कल्प तक देहअभिमान में रहे हो ना। देहीअभिमानी बनो तो शीतल भी बनो। तन्त निकल जावेगी आत्मा शीतल हो जावेगी। मुख्य बात पर ही ध्यान देना है। मुरली सुनना और सुनाना यह तो कथा सहज है। मुख्य है याद। यह तो जानते हो ना कि शिवबाबा हमारा बाबा है। वो ही हमारा टीचर भी है। गुरू है। साथ में ले जावेंगे ;परंतु याद ही नहीं करते हो। सो भी निराकार को कहते हैं कि वो ही हमारा बाप ,टीचर,सदगुरू है। बेहद का ही बाप, बेहद का ही टीचर है। रहमदिल है। इस छी2 दुनियां से ले जाते है। मनुष्य तो समझते हैं कि यहां पर ही स्वर्ग है। स्वर्ग कोई दूसरा थोड़े ही है। बाप तो समझाते हैं ना कि बच्चे अब तो तुम नर्क में हो। स्वर्ग सतयुग को कहा जाता है। नर्क कलियुग को कहा जाता है। पुरानी दुनियां भी इनको कहा जाता है। यह वैश्यालय है। विकारी ही रहते हैं। निर्विकारी को वाइसलेस कहा जाता हैं इतनी सहज बात को भी कोई विद्वान ,आचार्य नहीं जानते हैं। मुख से कहते हैं कि बाबा भूल जाते हैं। योग नहीं लगता है। अरे, मुरली पढ़ते रहते हो रोज। फिर टीचर को भूल जाते हो। बाप ने कितना सहज किया है। माया बहुत प्रबल है अर्थात् बलवान है ;परंतु माया क्या चीज है वो नहीं जानते हैं। भावी का भी अर्थ नहीं समझते हैं। सृष्टि का भी अर्थ नहीं समझते हैं। सृष्टि का चक्र चलता है। बाप कितना सहज समझाते हैं। बहुत मीठा बनो। शांत में ही अपने नशे में रहना चाहिए। पैसे–कौड़ी जो कुछ भी है वो सब खलास हो जाना है। हम आत्मा हैं। हाथ खाली जाना है। आत्मा कहती है कि मैं तो खाली नहीं मैं तो बहुत धन इकट्ठा कर जाती हूं। अच्छा, मीठे2 रूहानी सपूत बच्चों को बाप व दादा का यादप्यार बाद नमस्ते। ओम।